उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रदत्त कार्य 2020–21

कक्षा..... विषय.....

पत्र..... पत्रकोड.....

अनुक्रमांक..... नामांकन संख्या.....

परीक्षार्थी हस्ताक्षर प्राचार्य हस्ताक्षर

नोटः–उपरोक्त सूचना स्पष्ट भरें। परीक्षार्थी सिर्फ अनुक्रमांक ही भरे। परीक्षार्थी अपना नाम न लिखें। प्रदत कार्य स्वहस्तलिखित ही मान्य होगा अन्यथा की स्थिति में निरस्त कर दिया जायेगा।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रदत्त कार्य

परीक्षा : पी.जी.डी. ज्योतिष **प्रथमपत्र** **प्रथमसत्र**

कूटसंख्या - DJ-C-1 **पूर्णांकः- 80**

प्रथम भाग (लघु उत्तरीय प्रश्न) 150 शब्दों मे

निम्नलिखित 06 प्रश्नों में से किन्हीं 05 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 04 अंक का है। प्रत्येकं–4

1. ज्योतिष को काल बोधक शास्त्र कहा है। स्पष्ट करें।
2. तिथि क्षयवृद्धि किस अवस्था में होती है। स्पष्ट करें।
3. चालनविधि सूत्रसहित उल्लेख करें।
4. अधिमास का कारण स्पष्ट करें।
5. उदयलग्न किसे कहते है ? स्पष्ट करें।
6. पञ्चाङ्ग किसे कहते हैं ? स्पष्ट करें।

द्वितीय भाग (टिप्पण्यात्मक प्रश्नं) 500 शब्दों मे

निम्नलिखित 06 प्रश्नों में से किन्हीं 04 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 05 अंक का है। प्रत्येकं–5

1. ''ज्योतिषं मूर्धनिस्थितम्'' स्पष्ट करें।
2. चन्द्रस्पष्टीकरण उदाहरण लेकर स्पष्ट करें।
3. अक्षांश–रेखाँश का गणना का आधार क्या है ? स्पष्ट करें।
4. ज्योतिषशास्त्र में भास्कर का योगदान।
5. लग्न साधन स्पष्ट करें।
6. छः अङ्गों में ज्योतिषशास्त्र की प्रधानता सिद्ध करें।

तृतीय भाग (निबंधात्मक/विवरणात्मक एवं व्याख्यात्मक) 1000 शब्दों में

निम्नलिखित 04 प्रश्नों में किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है। प्रत्येकं–20

1. ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता विषय पर निबन्ध लिखें।
2. ''प्रत्यक्षं ज्योतिषंशास्त्रम'' विषय पर निबन्ध लिखें।
3. ज्योतिषशास्त्र के क्रमिक विकास के ऊपर निबन्ध लिखें।
4. वेदाङ्गज्योतिष विषय पर लघु निबन्ध लिखें।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परीक्षा : पी.जी.डी. ज्योतिष | प्रदत्तकार्य | प्रथमसत्र

द्वितीय पत्र

कूट संख्या – **DJ-C-2** | पूर्णांकः– 80

खण्ड – क
(लघूत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : – सभी खण्डों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित छः प्रश्नों में से किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 150 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 04
   - (क) दिनमान निकालने की पद्धती लिखें।
   - (ख) ययात् स्पष्ट कीजिए।
   - (ग) शीर्षोदयराशियों का नाम एवं प्रयोजन लिखें।
   - (घ) राशियों का वर्णज्ञान स्पष्ट करें।
   - (ड) गुरू ग्रह के बारे में लिखिए।
   - (च) स्थानिकसमय क्या है? स्पष्ट करें।

खण्ड – ख
(टिप्पण्यात्मक प्रश्न)

2. निम्नलिखित छः प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 500 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 05
   - (क) इष्टकाल।
   - (ख) राशियों का स्वभाव वर्णन करें।
   - (ग) भभोगानयनम्।
   - (घ) नक्षत्रपरिचय।
   - (ड) सूर्योदय–सूर्यास्त साधन विचार।
   - (च) चलनक्षत्र

खण्ड – ग
(निबन्धत्मकः/विवरणात्मक)

3. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 1000 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 20
   - (क) राशिचक्र का सविस्तार वर्णन करें।
   - (ख) पंचांग का महत्त्व एवं प्रयोजन करें।
   - (ग) सौरपरिवार।
   - (घ) भारतीय काल गणना पद्धती।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रदत्त कार्य

परीक्षा : पी.जी.डी. ज्योतिष **तृतीयपत्रम्** **प्रथमसत्र**

कूटसंख्या - DJ-C-3 **पूर्णांका:- 80**

प्रथम भाग (लघु उत्तरीय प्रश्न) 150 शब्दों मे

निम्नलिखित 06 प्रश्नों में से किन्हीं 05 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 04 अंक का है। प्रत्येकं–4

1. जन्मकुण्डली के द्वादश भावों से विचारणीय विषयों की विस्तृत विवेचना करें।
2. जन्म समय रात्रि– 10:25, सूर्योदय–5/45 इष्टकाल साधन करें।
3. स्वकल्पित उदाहरण देकर भयात्–भण्भोग साधन करें।
4. पूर्वनत एवं पश्चिमनत का उदाहरण लेकर स्पष्ट करें।
5. उदाहरण लेकर मंगल ग्रह स्पष्ट करें।
6. स्वकल्पि लग्न साधन करें।

द्वितीय भाग (टिप्पण्यात्मक प्रश्नं) 500 शब्दों मे

निम्नलिखित 06 प्रश्नों में से किन्हीं 04 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 05 अंक का है। प्रत्येकं–5

1. जन्मकुण्डली निर्माण में क्या–क्या आवश्यकता है। उदाहरण देकर स्पष्ट करें।
2. भयात एवं भभोग के विषय में विस्तृत विवेचन करें।
3. भुक्त प्रकार से लग्न साधन करें।
4. होरा–द्रेष्काण का उदाहरण लेकर स्पष्ट करें।
5. नवमांश की क्या उपयोगिता है। स्पष्ट करें।
6. पलभा द्वारा चरखण्डों का अमन कैसे होता है। उदाहरण लेकर स्पष्ट करें।

तृतीय भाग (निबंधात्मक/विवरणात्मक एवं व्याख्यात्मक) 1000 शब्दों में

निम्नलिखित 04 प्रश्नों में किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है। प्रत्येकं–20

1. दसमलग्न साधन किस प्रकार से किया जाता है। उदाहरण पूर्वक स्पष्ट करें।
2. यदि लग्न स्पष्ट–4/5/20/25 हो तो षड्वर्ग साधन करें।
3. स्वकल्पित उदाहरण लेकर चन्द्र स्पष्ट करें।
4. उदाहरण लेकर सूर्यस्पष्ट करें शास्त्रोक्त विधि पूर्वक।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परीक्षा : पी.जी.डी. ज्योतिष | प्रदत्तकार्य | प्रथमसत्र

चतुर्थ पत्र

कूट संख्या – **DJ-C-4** | पूर्णांकः– 80

खण्ड – क
(लघूत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : – सभी खण्डों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित छः प्रश्नों में से किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 150 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 04
   - (क) भौम एवं बुध ग्रह का स्वरूप लिखें।
   - (ख) ग्रहों का उच्च–नीच राशियों का वर्णन करें।
   - (ग) कर्क तथा सिंह राशियों का स्वरूप लिखिए।
   - (घ) ग्रहों की विशेष दृष्टि का उल्लेख करें।
   - (ड) राशियों की प्रकति पर प्रकाश डालें।
   - (च) चर–स्थिर–द्विस्वभाव राशियों का उल्लेख करें।

खण्ड – ख
(टिप्पण्यात्मक प्रश्न)

2. निम्नलिखित छः प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 500 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 05
   - (क) बृहस्पति एवं शुक्र ग्रह।
   - (ख) नवग्रहविचार।
   - (ग) राहु–केतु दृष्टि विचार।
   - (घ) ग्रहों के गुण–धर्म।
   - (ड) पंचधा मैत्री।
   - (च) मूल–त्रिकोण विचार।

खण्ड – ग
(निबन्धत्मकः/विवरणात्मक)

3. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 1000 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 20
   - (क) वर्तमान सन्दर्भ में ज्योतिष के महत्व पर प्रकाश डालें।
   - (ख) नैसर्गिक ग्रहमैत्री पर निबन्ध लिखें।
   - (ग) ज्योतिष क्यों आवश्यक हैं? प्रकाश डालें।
   - (घ) चर एवं स्थिर कारक ग्रहों के महत्व पर प्रकाश डालें।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परीक्षा : पी.जी.डी. ज्योतिष | प्रदत्तकार्य | प्रथमसत्र

पंचम पत्र

कूट संख्या – **DJ-C-5** | पूर्णांकाः– 80

खण्ड – क
(लघूत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : – सभी खण्डों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित छः प्रश्नों में से किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 150 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 04
   - (क) लघुपारावारी ग्रन्थ में किस दशा को ग्रहण किया गया है उसका साधन कीजिए।
   - (ख) त्रिकस्थान किसे कहते है? उनका शुभाशुभ फल निरूपित कीजिए।
   - (ग) केन्द्रत्रिकोणपति परस्पर सम्बन्ध होने पर क्या फल देते हैं? स्पष्ट कीजिए।
   - (घ) केन्द्रत्रिकोणस्थित राहुकेतु क्या फल देते हैं?
   - (ड) तपस्थानेश मन्त्रस्थान में और मन्त्र स्थानेश गुरू का फल स्पष्ट कीजिए।
   - (च) स्थानिकसमय क्या है? स्पष्ट करें।

खण्ड – ख
(टिप्पण्यात्मक प्रश्न)

2. निम्नलिखित छः प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 500 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 05
   - (क) पश्यन्तिसप्तमंसर्वे शनिजीवकुजा पुनः।
     विशेषतश्चत्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् ।। इस का भाव स्पष्ट कीजिए।
   - (ख) लग्नाद्व्ययद्वितीयेशोपरेशां साहचरर्ष्यतः।
     स्थानान्तररानुगुण्येनमवतः फलदायकौ ।। इसकी व्याख्या कीजिए।
   - (ग) केन्द्रत्रिकोणनेतारौदोषयुक्तावपिस्वयम्।
     सम्बन्धमात्रदृबलिनौमवेतांयोगकारकौ।। इसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।
   - (घ) सपंचमेशलग्नेशदशाराज्यप्रदायिनी।
     तथाधर्मपयुक्तस्यलग्नपस्यदशामता।। श्लोकानुसार दशाफल निरूपति कीजिए।
   - (ड) चत्वारो राशयोमद्रा केनद्रकोणाः शुभावहाः।
     तेषां योगेन यो भावः सोऽशुभोऽपि शुभो मवेत्।। इसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।
   - (च) मारकै सहसम्बन्धान्निहन्तापापकृत्शनिः।
     अतिक्रम्पेतरान् सर्वान् निहत्यैव न संशयः।। इस श्लोक का भाव निरूपित कीजिए।

खण्ड – ग
(निबन्धत्मकः/विवरणात्मक)

3. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 1000 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 20
   - (क) अष्टमंह्रयायुषः स्थानं अष्टमादष्टमंचयत्।
     तयोरपिव्ययस्थानं मारकस्थानपुच्यते।। श्लोकानुसार सोदाहरणमाकर निर्णय की व्याख्या कीजिए।
   - (ख) ग्रहों की उदाहरण सहित दशा अन्तर्दशासाधन कीजिए।
   - (ग) ग्रन्थानुसार उदाहरण सहित दो राजयोगों की व्याख्या कीजिए।
   - (घ) धर्मकर्माधिनेतारौ रन्ध्रलामाधिषौयदि।
     तयोः सम्बन्ध मात्रेण न योगं लमतेनरः।। इस श्लोक की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परीक्षा : पी.जी.डी. वास्तु | प्रदत्तकार्य | प्रथमसत्र

प्रथम पत्र

कूट संख्या – **C-101** | पूर्णांकाः– 80

खण्ड – क

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 150 शब्दों में

निर्देश : – सभी खण्डों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

. निम्नलिखित 06 प्रश्नों में से 05 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 04 अंक का है। प्रत्येकं – 04

1. गजब पृष्ठभूमि किसे कहते है।
2. तंतु आदि बाहर भावों के ग्रहों का फल लिखिए।
3. गृहारंभ में आठ प्रकार के निषेद्ध योगों के नाम लिखें।
4. वास्तु चक्र का उल्लेख करें।
5. वास्तु शब्द का अर्थ बताएं।
6. वास्तु शास्त्र की उत्पत्ति का वर्णन कीजिए।

खण्ड – ख

(टिप्पण्यात्मक प्रश्न) 500 शब्दों में

निम्नलिखित 05प्रश्नों में से 04 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 05 अंक का है। प्रत्येकं – 05

1. वास्तु शास्त्र का स्वरूप लिखकर के विभिन्न दिशाओं में देवताओं की स्थापना करते हुए उनकी आवश्यकताओं पर बल दीजिए।
2. पूर्व आग्नेय कोण में उत्तवी भूमि का लक्षण लिखकर फल बताएं।
3. दिशाओं में वृक्षों का शुभाशुभ विवेचन कीजिए।
4. गज पृष्ठभूमि का लक्षण लिखकर उसका फल बताएं।
5. वास्तु शास्त्र के भेद लिखिए।

खण्ड – ग

(निबंधात्मक / विवरणात्मक प्रश्न)1000 शब्दों में

निम्नलिखित 04 प्रश्नों में से किन्ही 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है प्रत्येकं–20

1. वैदिक वास्तु का स्वरूप स्पष्ट उल्लेख करते हुए आधुनिक युग में वास्तु शास्त्र की उपयोगिता का विवेचन करें।
2. औद्योगिक वास्तु एंव गृह वास्तु का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
3. आधुनिक युग में वास्तु शास्त्र की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
4. वर्णानुसार भूमि के लक्षण एवं विभिन्न आचार्यों के मतों का वर्णन कीजिए।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परीक्षा : पी.जी.डी. वास्तु **प्रदत्तकार्यम्** **प्रथमसत्र**

द्वितीयपत्रम्

(कूटसंख्या - -C-102) **पूर्णांकाः- 80**

प्रथम भाग (लघु उत्तरीय प्रश्न) 150 शब्दों मे

निम्नलिखित 06 प्रश्नों में से किन्हीं 05 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 04 अंक का है प्रत्येकं –4

1. ब्रह्मस्थान के विषय में विस्तार से चर्चा करें।
2. सूर्यप्रकाश के विषय में विस्तार से उल्लेख करें ? प्रकाश क्यों आवश्यक है।
3. तालाब खनन के योगों के विषय में उल्लेख करें।
4. दिग् विभाग के अनुसार कूप लक्षण के विषय में लिखें।
5. जलज्ञान हेतु भूमि के गुणों का वर्णन करें।
6. रामदैवज्ञ के मतानुसार कूप विभाग के विषय में उल्लेख करें।

द्वितीय भाग (टिप्पण्यात्मक प्रश्नं) 500 शब्दों मे

निम्नलिखित 05 प्रश्नों में से किन्हीं 04 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 05 अंक का है। प्रत्येकं –5

1. भूमि प्रकारों के विषय में उल्लेख करें।
2. ब्राह्मणी भूमि कौन से वर्ण के लिए उपयुक्त है। विवेचना करें।
3. पञ्चमहाभूतों का विस्तृत विवेचन करें।
4. शल्यज्ञान क्यों आवश्यक है। व्याख्या करें।
5. जलविचार वास्तुशास्त्रानुसार करें।

तृतीय भाग (निबंधात्मक/विवरणात्मक एवं व्याख्यात्मक) 1000 शब्दों में

निम्नलिखित 04 प्रश्नों में किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है। प्रत्येकं –20

1. भूमि की उत्तकृष्टता के ऊपर एक लघु निबन्ध लिखें।
2. आकाश तत्व का निर्धारण करते हुए विवेचन करें।
3. वास्तुपुरुष के अंगविभाग के अनुसार उपयोगिता सिद्ध करें।
4. दिशानुसार वास्तुसम्मत गृह के चारों और वृक्षों का निर्धारण करें।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परीक्षा : पी.जी.डी. वास्तु | प्रदत्तकार्य | प्रथमसत्र

तृतीय पत्र

कूट संख्या – **C-103** | पूर्णांकः– 80

खण्ड – क

(लघूत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : – सभी खण्डों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

निम्नलिखित 06 प्रश्नों में से किन्ही 05 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 150 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 04

1. ब्राह्मणी भूमि के रंग, स्वाद एवं गंध लिखिए।
2. भूमि परीक्षण हेतु किसी एक विधि का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. वर्गाकार भूमि के लक्षण एवं फल बताइए।
4. दिक्शोधन की आवश्यकता वास्तु में कहां–कहां होती है? वर्णन कीजिए।
5. चार दिशाओं एवं चार विदिशाओं के नाम लिखिए।
6. भूमिका फलवत्व किन–किन देशों में शुभ होता है।

खण्ड – ख

(टिप्पण्यात्मक प्रश्न)

निम्नलिखित 05 प्रश्नों में से किन्ही 04 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 500 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 05

1. क्षत्रिय भूमि के लक्षण प्रतिपादित कीजिए।
2. भूमि खनन द्वारा प्राप्त वस्तुओं का शुभाशुभ प्रतिपादित कीजिए।
3. गोमुखी एवं सिंह मुखी भूमियों के लक्षण वर्णित कीजिए।
4. रात्रि में मार्कटिक तारों द्वारा दिशा साधन की विधि पर प्रकाश डालिए।
5. दिक्शोधन क्या है? इसकी आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

खण्ड – ग

(निबन्धत्मकः / विवरणात्मक)

निम्नलिखित 04 प्रश्नों में से किन्ही 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 1000 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 20

1. भूखंड चयन की विधि पर सविस्तार प्रकाश डालिए।
2. भूमि शोधन की प्रविधियों पर सुविस्तृत निबंध लिखिए।
3. भूमि की आकृतियों के शुभाशुभत्व पर निबंध लिखिए।
4. दिशाओं का परिचय देते हुए दिक्साधन की प्रविधियों का सुविस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परीक्षा : पी.जी.डी. वास्तु | प्रदत्तकार्य | प्रथमसत्र

चतुर्थ पत्र

कूट संख्या – **C-104** | पूर्णांकाः– 80

खण्ड – क
(लघूत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : – सभी खण्डों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

निम्नलिखित छः प्रश्नों में से किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 150 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 04

1. चंद्र ग्रह का स्वरूप लिखिए।
2. सूर्य आदि ग्रहों की नीच राशियों का वर्णन कीजिए।
3. द्वादश राशियों के अधिपतियों का उल्लेख कीजिए।
4. करणों के नाम व उनके प्रकार का वर्णन कीजिए।
5. योग कितने होते हैं? स्पष्ट कीजिए।
6. लग्न किसे कहते हैं? उनके नाम लिखिए।

खण्ड – ख
(टिप्पण्यात्मक प्रश्न)

निम्नलिखित 05 प्रश्नों में से किन्ही 04 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 500 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 05

1. ग्रहों की तात्कालिक मैत्री का वर्णन कीजिए।
2. गुरु एवं शुक्र की नैसर्गिक मैत्री का वर्णन कीजिए।
3. नामकरण मुहूर्त का वर्णन कीजिए।
4. ग्रहों के राजत्वादि विभाग का वर्णन कीजिए।
5. राशियों के पुरुष स्त्री, कूर सौम्य का वर्णन कीजिए।

खण्ड – ग
(निबन्धत्मकः / विवरणात्मक)

निम्नलिखित 04 प्रश्नों में से किन्ही 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 1000 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 20

1. ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
2. लग्न साधन विधि की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
3. ग्रह स्पष्ट का परिचय देते हुए सूर्य स्पष्ट को उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।
4. मेष, वृष एवं मिथुन राशियों के स्वरूप की प्रयोजन सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परीक्षा : पी.जी.डी. वास्तु | प्रदत्तकार्य | प्रथमसत्र

पंचम पत्र

कूट संख्या – **C-105** | पूर्णांकाः– 80

खण्ड – क
(लघूत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : – सभी खण्डों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित 06 प्रश्नों में से किन्ही 05 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 150 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 04
   1. गृह प्रवेश में नक्षत्र विचार का वर्णन करें।
   2. गृह प्रवेश में लग्न विचार का वर्णन करें।
   3. गृहारंभ में लग्नशुद्धि का वर्णन करें।
   4. भूमिशयनविचार का वर्णन करें।
   5. शिलान्यास दिशा का प्रतिपादन करें।
   6. गृहप्रवेश में गृहपति के कर्तव्यों का वर्णन करें।

खण्ड – ख
(टिप्पण्यात्मक प्रश्न)

2. निम्नलिखित 05 प्रश्नों में से किन्ही 04 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 500 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 05
   1. वामरविचार पर टिप्पणी लिखें।
   2. गृहारंभ में निषिद्धयोगों पर टिप्पणी लिखें।
   3. गृहप्रवेश में कलशचक्र का वर्णन करें।
   4. जीर्णगृहप्रवेश में मुहूर्त विचार पर टिप्पणी लिखें।
   5. गृहारंभ में वृषवास्तुचक्र का वर्णन करें।

खण्ड – ग
(निबन्धत्मकः / विवरणात्मक)

3. निम्नलिखित 04प्रश्नों में से किन्ही 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर 1000 शब्दों में हों। प्रत्येकं – 20
   1. राहूमुख–पुच्छ विचार पर विस्तृत निबन्ध लिखें।
   2. शिलान्यास विधि पर विस्तृत निबन्ध लिखें।
   3. त्रिविधि गृहप्रवेश मुहूर्त का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
   4. वास्तुशास्त्र और मुहूर्तशास्त्र के अन्तः सम्बन्ध पर एक निबन्ध लिखें।